उत्तर प्रदेश के जिला चन्दौली के विकास खण्ड चकिया के 6 ग्राम पंचायतों के 10 राजस्व गांवों में किये गये आधारभूत सर्वेक्षण का विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन।

द्वारा – रूरल ऑर्गनाइजेशन फॉर सोशल एडवान्समेन्ट

"ROSA" – ककरमत्ता, वाराणसी

पृष्ठभूमि

संस्था के बारे में :–

रूरल ऑर्गनाइजेशन फॉर सोशल एडवान्समेन्ट, जिसे रोजा संस्थान के नाम से जाना जाता है। यह एक सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करने वाली सामाजिक संस्था जो उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के जिला गाजीपुर, चन्दौली, आजमगढ़ व बलरामपुर के ग्रामीण परिवेश में कार्य कर रही है। संस्था का मुख्य लक्ष्य समुदाय का वह वर्ग है जो वर्षो से विभिन्न समाज व जातियों में बंटा हुआ है, जो समाज के वंचित तबको का है चाहे व किसी भी धर्म व जाााति का हो जिसमें बच्चे, महिलायें, मजदूर प्रमुख रूप से शामिल हैं। जो अपने स्तर से अपनी आजीविका व मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रयास कर रहा है लेकिन वर्तमान सामाजिक व आर्थिक परिस्थितियों के कारण उसका सम्मानपूर्ण विकास नही हो पाया है।

समाज सेवा से वर्षो से जुड़े सामाजिक विचारधारा के सदस्यों ने रोजा संस्थान की बुनियाद सन् 2002 में डाली। यह संस्था 2003 में सोसाइटी रजिस्ट्रेशन की धारा 21, 1860 के अर्न्तगत पंजीकृत हुई।

एरिया प्रोफाईल :–

नीति आयोग की सूची में आकांक्षी जिला चन्दौली, उत्तर प्रदेश के 75 जिलों में से एक है। यह वाराणसी मण्डल का एक जिला है। इस जिलों की सीमायें बिहार से लगती है। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश के जिला सोनभद्र, जिला मिर्जापुर, जिला वाराणसी व जिला गाजीपुर की भी सीमाऐं लगती है। इस जिले में कुल 9 विकास खण्ड बढ़नी, चहनियां, चकिया, चन्दौली, धानापुर, नौगढ़, नियमताबाद, सकलडीहा और शाहबगंज स्थित है। विकास खण्ड चकिया पहाड़ी और मैदानी दोनो ही क्षेत्र स्थित है। इसमें नौगढ ब्लाक पूरी तरह से पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। गंगा, कर्मनासा व चन्द्रप्रभा आदि इस जिले की प्रमुख नदियां हैं जो इस क्षेत्र से होकर बहती है और जिले की सीमाओं को निर्धारित करती है। इस जिले में कुल पांच तहसील है जो वर्तमान में कार्यरत है। जिसमें नौगढ़, मुगलसराय, चन्दौली, सकलडीहा और चकिया है। इस जिले का 2001 के जनगणना के अनुसार साक्षरता दर 59.7 प्रतिशत था। इस जिले में कुल 1651 राजस्व ग्राम है। जिसमें 219 गैर आबाद गांव है। जिला चन्दौली 2485 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। इस जिले की कुल जन्संख्या 2011 जनगणना के

आधार पर 2416617 है। चन्दौली में इस जिले का मुख्यालय स्थित है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है पहाड़ी के पास होने के नाते इस क्षेत्र में वर्षा जल का पूरा फायदा मिलता है। विभिन्न कैनाल के माध्यम से इस क्षेत्र में सिचाई की जाती है।

जिला चन्दौली के विकास खण्ड चकिया के कुल 75 ग्राम पंचायतों के 06 ग्राम पंचायतों का सर्वे किया गया जिसमें कुल 10 राजस्व गांव स्थित है। इन गांवो में रहने वाले दलित, अल्पसंख्यक और पिछड़ी वर्ग के परिवारों को सर्वे में लिया गया। कुल 496 परिवारों का बेसलाइन सर्वे किया गया। यह क्षेत्र जिला मिर्जापुर के सीमा से लगा हुआ है। इस क्षेत्र से जिला मुख्यालय लगभग 35 किमी की दूरी पर स्थित है। ब्लाक मुख्यालय चकिया इस क्षेत्र से 07 किमी की दूरी पर स्थित है। सर्वे किये गये क्षेत्र के बीचो बीच सिकन्दरपुर एक स्थानीय बाजार स्थिति है जिसे पटेल चौराहा के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र से होकर एक लिंक रोड निकलती है जो टेंगरामोड़ और चकिया से होकर चन्दौली और मुगलसराय के लिये जाती है। स्थानीय लोगों के लिये यातायात का एक मात्र साधन ऑटो, जीप व बस है। इस रोड पर केवल प्राइवेट बस ऑटो आदि दिन के समय चलती है।

हॉउसहोल्ड की स्थिति :–

District	Block	Sl. No.	Gram Panchayat	Sl. No.	Village Name	HH	Social Category			
							GEN	OBC	SC	ST
Chandauli	Chakia	1	Ramlakshamanpur	1	Ramlakshamanpur	70	1	52	17	0
Chandauli	Chakia			2	Bahuara	24	1	16	7	0
Chandauli	Chakia	2	Rampur Kalan	3	Bairi	55	8	46	1	0
Chandauli	Chakia	3	Gadhwa Semraur	4	Gadhwa Dakshini	32	0	20	12	0
Chandauli	Chakia			5	Semraur	38	2	0	36	0
Chandauli	Chakia			6	Jagariya	39	0	0	39	0
Chandauli	Chakia	4	Kudra	7	Kudra	31	0	21	10	0
Chandauli	Chakia			8	Fattepur	82	0	30	52	0
Chandauli	Chakia	5	Pipariya	9	Pipariya	96	1	62	33	0
Chandauli	Chakia	6	Parsiyan Kalan	10	Parsiyan Kalan	29	0	29	0	0
					Total	**496**	**13**	**276**	**207**	**0**

<u>बेस लाइन की विधियां :–</u>

Smile Foundation के सहयोग से रोजा संस्थान द्वारा उत्तर प्रदेश के आकांक्षी जिला चन्दौली के विकास खण्ड चकिया के द्वितीयक आंकड़ा का अध्ययन कर क्षेत्र के 6 ग्राम पंचायतों के 10 गांवों का चयन कर गांव में भ्रमण करके वहां रहने वाले लोगों, ग्राम प्रधान

आदि से सम्पर्क कर द्वितीयक आंकड़ा के जानकारी से मिलान किया गया और रूप से चयन किया गया। फिर दलित, पिछड़ी और अल्पसंख्यक समुदाय के कुल 496 परिवारों का दिसम्बर 2024 में सर्वे प्रपत्र पर आंकड़ा एकत्र किया किया गया। आंकड़ें को रैंडम आधार पर चेक किया गया और एक्शल सीट में डाटा सुरक्षित किया गया। उपलब्ध आकड़ों के आधार पर विश्लेषण करके प्रतिवेदन तैयार की गयी।

जिसका एक विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन इस प्रकार से है।

1. **सामाजिक आधार पर स्थिति :–**

परियोजना क्षेत्र के गांवों में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर लच्छित समूह के कुल 496 परिवार मिलें। जिसमें सामान्य वर्ग के 13, पिछड़ी वर्ग के 276, अनुसूचित जाति वर्ग के 207 और अनुसूचित जनजाति से 0 परिवार मिलें। इसमे से 21 मुस्लिम समुदाय से हैं। पाई चार्ट के आधार पर सामाजिक स्तर इस प्रकार है –

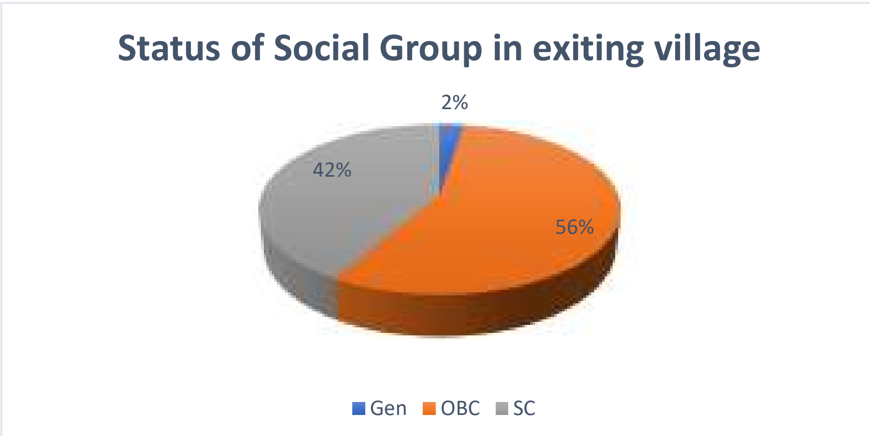

2. <u>धार्मिक आधार पर स्थिति :–</u>

परियोजना क्षेत्र के गांवों में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कुल 496 परिवारों के आधार पर 475 हिन्दू समुदाय व 21 मुस्लिम समुदाय के परिवार निवास करते हैं। पाई चार्ट के आधार पर धार्मिक स्थिति इस प्रकार है:–

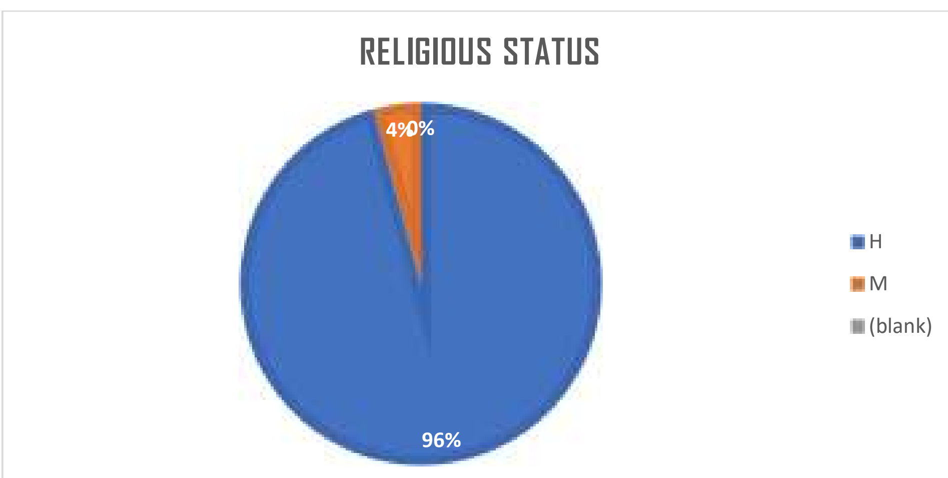

3. <u>लैंगिक आधार पर बच्चों की स्थिति :–</u>

परियोजना क्षेत्र के गांवों में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कुल 495 परिवारों में 11 वर्ष से 19 आयु वर्ग के कुल 943 बच्चें हैं। जिसमें 577 लड़कियां और 366 लड़कें हैं। पाई चार्ट के आधार पर बच्चों का स्तर इस प्रकार है :–

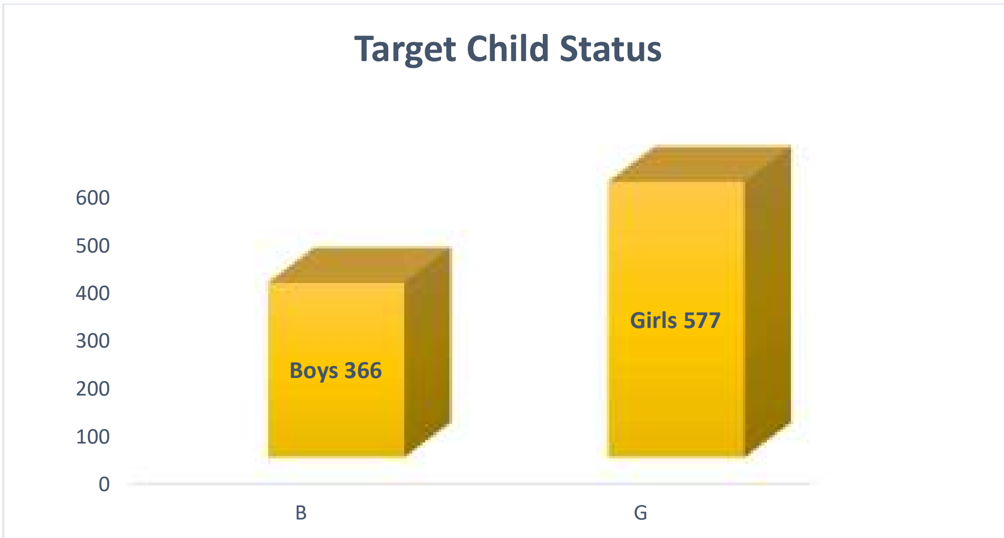

4. <u>स्कूल ड्राप आउट स्थिति :–</u>

परियोजना क्षेत्र के गांवों में बेसलाईन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कुल 496 परिवारों में से कुल 943 बच्चें है। जिसमें 577 बालिकाऐं और 366 बालक हैं। कुल 577 बालिकाओं में से 97 बालिकायें ड्राप आउट हैं। जबकि 366 बालकों में से 69 बालक ड्राप आउट एंव 2 बालक ऐसे पाये गये जो कभी स्कूल नही गये। इस आधार पर हम कह सकते है

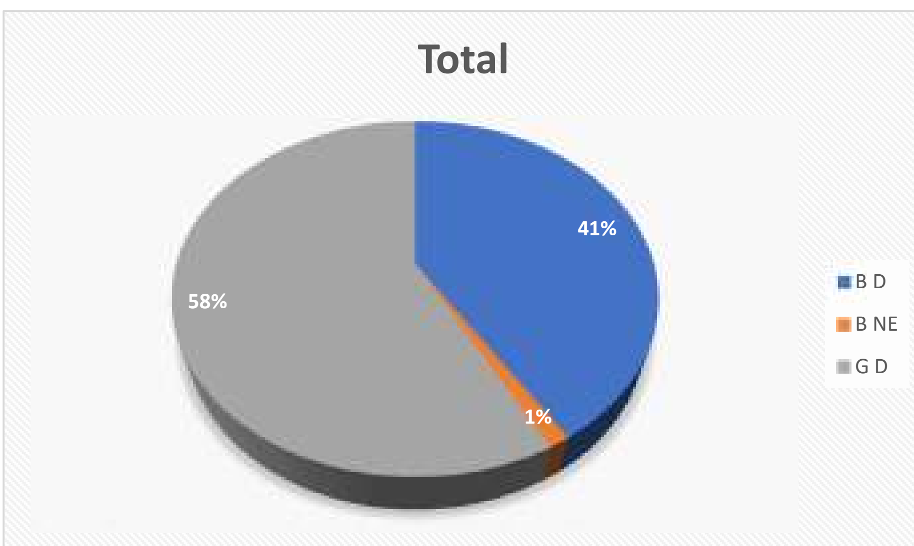

कि कुल 168 ड्राप आउट में से लगभग 58 प्रतिशत बालिकायें स्कूल ड्राप आउट है और वहीं 42 प्रतिशत बालक भी स्कूल ड्राप आउट है। पाई चार्ट के आधार पर कुल स्कूल ड्राप आउट बालक और बालिकाओं का प्रतिशत इस प्रकार है :–

5. <u>कक्षावार स्कूल ड्राप आउट की स्थिति :–</u>

परियोजना क्षेत्र के गावों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त डाटा के आधार पर कुल 168 बालक और बालिकायें स्कूल ड्राप आउट हैं। अगर हम इसे कक्षावार देखते हैं तो पाते हैं कि स्कूल जाने के प्रारम्भिक दौर में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने और उच्च प्राथमिक शिक्षा पूरी करने पर सबसे अधिक स्कूल ड्राप आउट के केस है। इस आधार पर हम पाते है कि जैसे जैसे कक्षा और स्कूल में बदलाव हो रहा है वैसे वैसे बच्चे स्कूल से ड्राप आउट हो रहे हैं। पाई चार्ट के आधार पर कक्षावार कुल स्कलू ड्राप आउट बालक–बालिकाओं की स्थिति इस प्रकार है:–

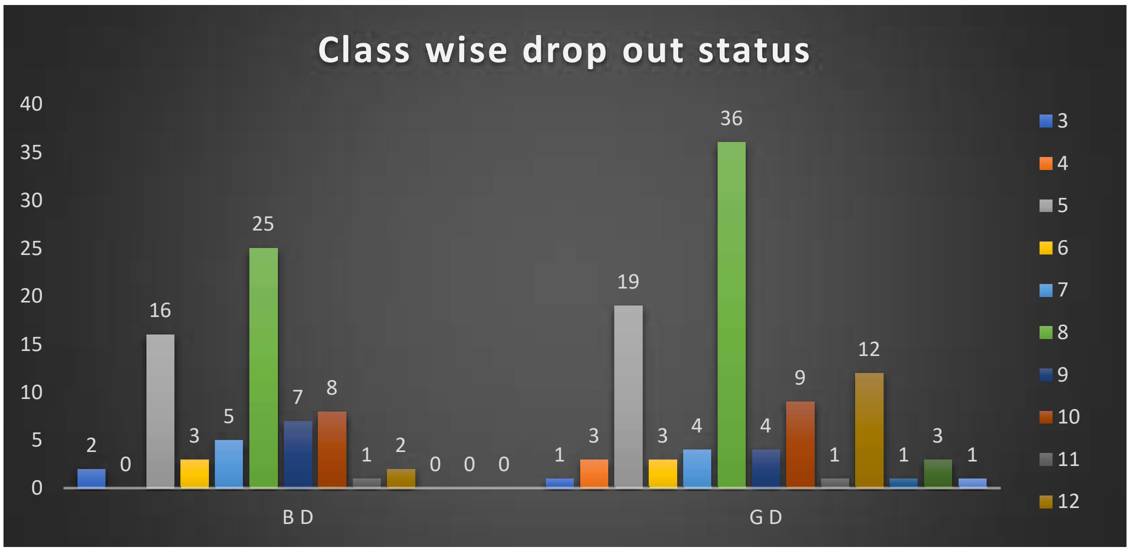

6. <u>स्कूल ड्राप आउट के कारणों की स्थिति–</u>

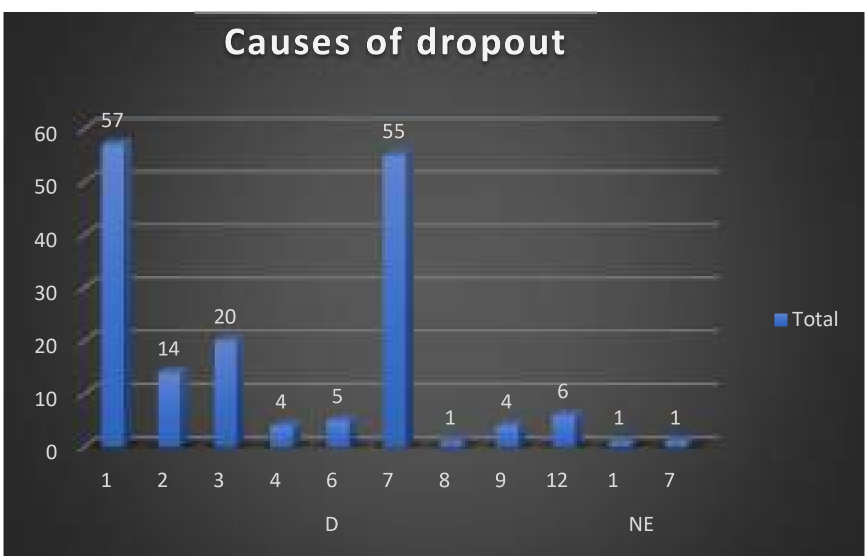

परियाजेना क्षेत्र के गावों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 168 बालक और बालिकाओं के स्कूल छोड़ने के कारणों को जाना गया। जिसमें 58 परिवारो के मुखिया ने बताया कि परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारणों से स्कूल छोड़ना पड़ा। जबकि 14 परिवारों ने परिवार का प्रवासी होना बताया तो वहीं 56 परिवारों ने बच्चो में शिक्षा के प्रति रूचि का न होना बताया। 20 परिवारों ने स्वास्थ्य

खराब होने के कारणों को बताया तो वहीं 4 परिवारों ने बाल मजदूरी का कारण बताया है। पाई चार्ट के आधार पर हम पाते है कि 11 कारणों में सबसे बड़ा कारण परिवार की आर्थिक स्थितियां और पढ़ाई में रूचि ना होना जिम्मेदार है। लेकिन हम यह भी देखते है कि 117 बच्चे कक्षा 8 तक ही शिक्षा के दौरान स्कूल छोड़ दिये जबकि शिक्षा विभाग कक्षा 8 तक के लिये निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करती है। फिर भी परिवार के मुखिया आर्थिक कारणों को जिम्मेदार बता रहे हैं।

7. आयु के आधार पर स्कूल ड्राप आउट की स्थिति–

परियोजना क्षेत्र के गावों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकडों के आधार पर 168 बालक और बालिकाऐं जो स्कूल छोड चुके है उनके आयु के आधार पर ड्राप आउट होने की स्थिति को

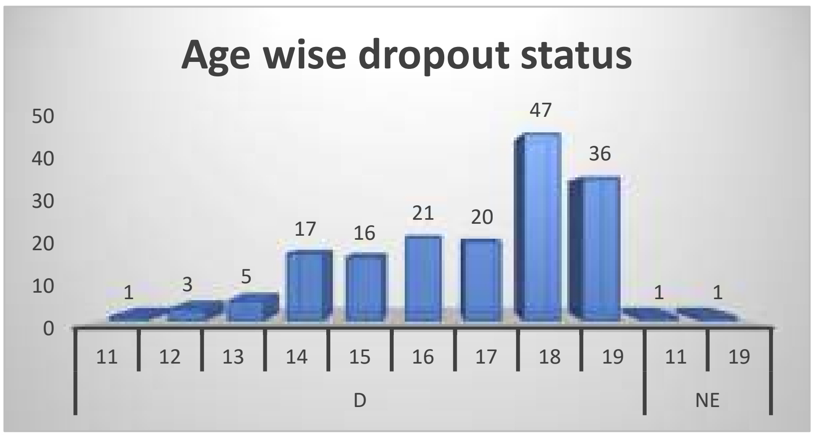

पाई चार्ट के आधार पर देख सकते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जैसे जैसे आयु बढ़ती गई वैसे वैसे स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि होती गयी। इस आधार पर हम पाते हैं कि इस क्षेत्र में जैसे जैसे कक्षा में वृद्धि होता है और आयु बढ़ती है वैसे वैसे बच्चों के ड्राप आउट की संख्या में वृद्धि हो जाती है। जिसमें सबसे बड़ा कारण आर्थिक स्थिति कमजोर होने और बच्चों का शिक्षा के प्रति रूचि का न होना, परिवार का प्रवास होना व स्कूल की घर और गांव से दूरी होना भी है। विशेषतौर पर बालिकाओं का स्कूल छोड़ना।

8. सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर स्कूल ड्राप आउट :–

परियोजना क्षेत्र के गांवों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 168 बालक और

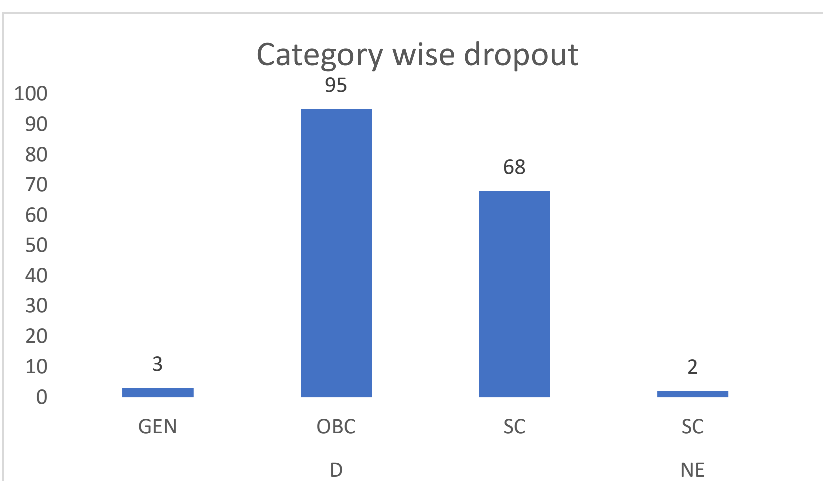

बालिकाऐं जो स्कूल छोड़ चुके हैं उनके सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर स्थिति का विश्लेषण करते है तो पाते है कि सामान्य वर्ग में 1.78 प्रतिशत, पिछड़ी जाति के 56.54 प्रतिशत, अनुसूचित जाति के 40.47 प्रतिशत और

अनुसूचित जाति के 1 प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं जो कभी स्कूल नही गये। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पाते है कि अनुसूचित जाति और पिछड़ी जाति दोनों वर्ग के बच्चों का

9. सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर उच्च शिक्षा की स्थिति :–

परियोजना क्षेत्र के गांवों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 74 बालक और बालिकाऐं हैं जो 12वीं के बाद उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इसमें 57 बालिकाऐं और 17 बालक हैं। सामाजिक वर्गीकरण चार्ट के आधार पर हम देखते हैं कि संख्या के आधार पर सभी सामाजिक वर्गो में बालिकाओं की संख्या अधिक है। इसका कारण यह भी है कि इस क्षेत्र के अधिकांश बालक पलायन कर अन्य क्षेत्रों में अपने परिवार की आजिविका में सहयोग करने के उद्देश्य से निवास कर रहे हैं।

10. सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर निरन्तर शिक्षा की स्थिति :–

परियोजना क्षेत्र के गांवों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 828 बच्चे ऐसे पाये गये जिनकी शिक्षा जारी है और आगे की शिक्षा भी जारी रखना चाहते हैं। इसमें से 519 बालिकायें और 309 बालक है। सामाजिक आधार पर हम पाते हैं कि संख्या की दृष्टिकोण से बालिकायें सभी सामाजिक वर्गो में अधिक है और उनमें शिक्षा जारी रखने के प्रति अधिक रूचि भी है। बालिकाओं में अत्यधिक रूचि होने के साथ साथ बाधायें भी बहुत अधिक हैं।

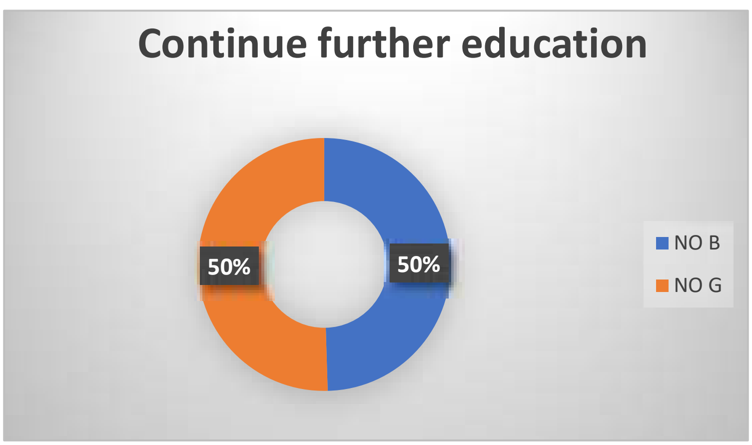

11. बालिकाओं के जीवन के सपनों की स्थिति :–

परियोजना क्षेत्र के गांवों में बेस लाइन सर्वे के दौरान बालिकाओं के सपनों को जाना गया। सर्वे में प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 122 बालिकाओं ने अपने सपनों को बताया शेष बालिका ने मार्गदर्शन के अभाव में कोई सपना ही नही तय किया है। चार्ट के आधार पर हम पाते हैं कि सबसे अधिक 45 बालिकाओं का सपना शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दें और योग्य अध्यापिका बनें। इसी प्रकार से दूसरे स्थान पर 35 बालिकाओं का सपना स्वास्थय के क्षेत्र में डॉक्टर बनना है तो वहीं तीसरे स्थान पर पुलिस बनने की अपेक्षायें है।

इनमें से 358 बालिकायें ऐसे भी है जिनका कोई सपना नही है और वे नाकारात्मक प्रभाव में है। सूची के आधार पर कुल 23 ऐसी कटगेरी है जिसमें बालिकाओं ने जबाब दिया है। हम समझते है कि बड़े सपनो को साकार करना एक बड़ी चुनौती है फिर भी सपनो को पाने के लिये सही दिशा में प्रयास करना भी जरूरी है जिसकी कमी उनके शिक्षा के चुनाव में देखने को मिलता है।

<u>बाल विवाह की स्थिति :–</u>

परियोजना क्षेत्र के गावों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर 3 परिवार ऐसे मिले हैं जिसमें 2 बालिकाओं का विवाह 18 वर्ष पूर्ण होने से पहले कर दिया गया वहीं 1 बालिका का विवाह 19 वर्ष की उम्र में किया गया। कम उम्र में विवाह के आंकडें और अधिक हो सकते हैं अतः इस पर पुनः परियोजना के कार्य के दौरान चिन्हित कर करने की आवश्यकता है।

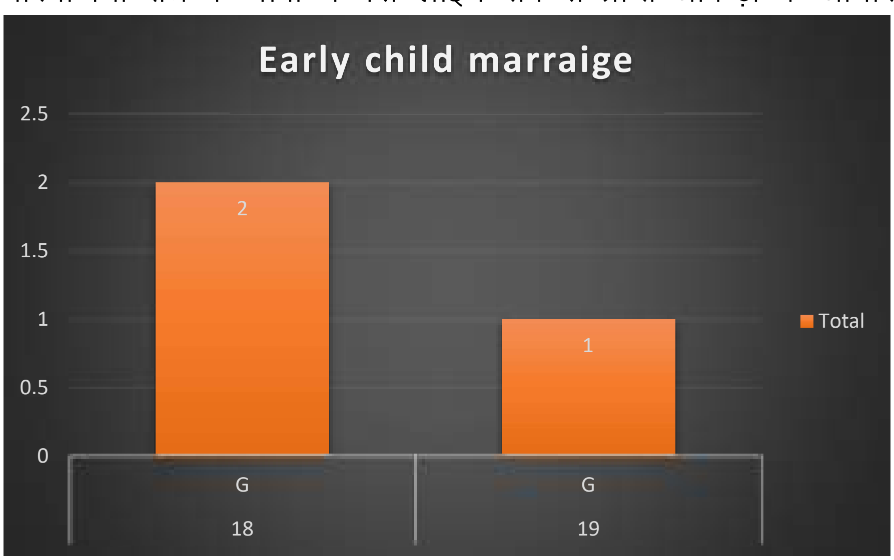

रोजा/मुस्कान परियोजना के साथ जुड़ने/भागीदारी पर की सहमति की स्थिति :–

परियोजना क्षेत्र के गावों में बेस लाइन सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर परिवारों से

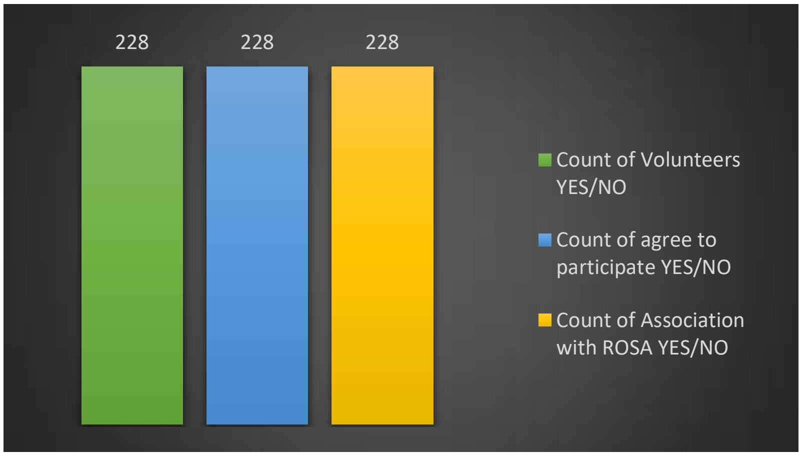

परियोजना के साथ जुड़ने, गतिविधियों मे भागीदारी करने और बालिकाओं के उन्नति में एक स्वंय सेवक/नेतृत्वकर्ता के रूप में पहल करने के सवाल पर कुल 496 परिवारों में से अधिकांश परिवारों ने सहमति प्रदान किया। चार्ट के आधार पर पर स्थितियां इस प्रकार से है। इस आधार पर हम पाते है कि बालिकाओं की इच्छा आगे बढ़ने की है जो की सकारात्मक संदेश है।

निष्कर्ष/ सुझाव :–

परियोजना क्षेत्र के गांव में आधारभूत सर्वे से प्राप्त आंकड़ों और विश्लेषण के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पंहूचते हैं –

1. परियोजना क्षेत्र में एक सामाजिक वर्गों का मिश्रण है और सभी वर्गो का प्रतिनिधित्व इस परियोजना में है।
2. परियोजना क्षेत्र में अनुसूचित जाति और पिछड़ी वर्ग समुदाय की संख्या अधिक है वहीं सामान्य वर्ग एंव अल्पसंख्यक समुदाय की संख्या कम है।
3. परियोजना क्षेत्र ग्रामीण भौगोलिक परिवेश है और गांवों के बीच की दूरी औसत है। कुछ गांव रोड से लगे हैं तो कुछ गांव रोड से 3 से 4 कि0मी0 की दूरी पर है। जहां पर लोकल साधन की उपलब्धता कम है।
4. सरकार द्वारा विवाह की समय सीमा के आधार पर सर्वे में 3 बाल विवाह पाया गया। यह संख्या बढ भी सकती है।
5. डाटा कलेक्शन में बालको की संख्या कम है इससे यह प्रतीत हो रहा है कि यहां पर 19 वर्ष से उपर बालकों की संख्या अधिक है।
6. परियोजना क्षेत्र में बालिकाओं की जीवन कौशल की अपेक्षायें बड़ी है और उन्हें मार्गदर्शन की आवश्यकता है।
7. जो बालिकायें कक्षा 8, कक्षा 10, कक्षा 12 में अध्ययनरत है उन्हे उनके सपनों और उनके आगे के शिक्षा के विषय निर्धारण के लिये मार्गदर्शन की जरूरत है।
8. जो बालिकायें ड्राप आउट है उनका पुनः नामांकन और फालोअप की जरूरत है।
9. जो बालिकायें आगे की शिक्षा जारी रखने से मना की है उनके घरेलू और रूचि के परिस्थितियों का अध्ययन करने की जरूरत है। प्राप्त डाटा के आधार पर आगे की प्रकिया करनी होगी।

10. जिन बालिकाओं ने अपने भावी सपनो को बताया है उनके पूर्व की शिक्षा, वर्तमान की शिक्षा के आधार पर भावी सपनो का पुर्नगठित करने की जरूरत होगी और जिन बालिकाओं ने अभी तक अपने जीवन में कुछ भी बनने का सपना नही देखा है उन्हें उनके शिक्षा के आधार पर प्रथम पीढ़ी लर्नर के हिसाब से कैरियर मार्गदर्शन करने की जरूरत है।
11. ड्राप आउट के कारणों में जिन परिवारों से बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि की बात आयी है उन बच्चों और उनके अभिभावकों की काउन्सिलिंग करने की जरूरत होगी।
12. जिन परिवारों ने आर्थिक स्थितियों को शिक्षा में बाधा बताया है उनके परिवार की आर्थिक परिस्थियों और शिक्षा के सरकारी सहयोग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन कर परिवार के मुख्य सदस्यों को परामर्श देने की जरूरत है।
13. बच्चो को स्कॉलरशीप, अटल आवासीय योजना और सरकार की ओर से संचालित विभिन्न विकल्पों के बारें में जानकारी प्रदान करने की जरूरत होगी।
14. स्थानीय स्तर पर युवाओं और पुरूषों को बालिका शिक्षा के योगदान पर संवेदनशील करने की जरूरत होगी।

द्वारा– रोजा संस्थान, ककरमत्ता, वाराणसी।

ज्नवरी– 2025